# HIN2B09b

(Compréhension de l'écrit)

Cours – 4

## विज्ञापन का आकर्षण

(4/18/2012 बीनू भटनागर)

आजकल अक्सर लोग कहते हैं, चारों ओर बाज़ार पसरा है, विज्ञापन आकृष्ट करते हैं, बच्चे महँगे महँगे सामान ख़रीदने की ज़िद करते हैं। आवश्यकता न होने पर भी लोग फ़ालतू सामान ख़रीद लेते हैं। कभी लोग पुराने वक्त को याद करने लगते हैं जब बाज़ार और मीडिया की पँहुच आम आदमी तक नहीं थी।

संतोष एक निजी गुण है, यदि संतोष आवश्यकता से अधिक बढ़ जाय तो व्यक्ति को अकर्मण्य बना देता है। व्यक्ति न अपने लिये कुछ करना चाहता है न परिवार के लिये न ही समाज के लिये। संतोष हो ही नहीं और जीवन मे बहुत जल्दी जल्दी बहुत कुछ पाने की या हासिल करने की इच्छा बलवती हो जाय तो व्यक्ति भ्रष्टचार या अपराध की तरफ़ मुड़ सकता है।

जब आर्थिक उन्नति होती है तो उत्पादन बढ़ता है, यह निश्चय ही विकास का संकेत है। उत्पादन बढ़ने से अधिक लोगों को रोज़गार मिलता है, उनकी ख़रीदने की क्षमता बढ़ती है। जब बाज़ार मे तरह तरह के उत्पाद हैं तो बिकने भी चाहिये। जब पहले उत्पादन कम था, ख़रीदने के लिये विकल्प भी कम थे इसलिये विज्ञापन की आवश्यकता भी कम थी। विज्ञापन देने के माध्यम भी कम थे, पर विज्ञापन कोई नई चीज़ भी नहीं है, इससे बाज़ार मे उपलब्ध सामान की जानकारी उपभोक्ता को मिलती है।... विज्ञापन व्यवसाय जगत का एक अहम हिस्सा हैं। विज्ञापनदाताओं के लिये भी एक आचार संहिता का पालन करना आवश्यक होता है, जैसे अपने माल की तरीफ़ मे अतिशयोक्ति न करें, विज्ञापन अश्लील न हों या वो किसी की भावनाओं को ठेस न पहुँचाये आदि। विज्ञापन जगत भी बहुत सारे लोंगों को रोज़गार देने का ज़रिया भी है, इसलिये विज्ञापन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। विज्ञापनदाता और उत्पादकों का तो उद्देश्य ही यही होता है कि उनके विज्ञापन पर अधिक से अधिक लोगों की नज़र पड़े, उनके उत्पाद को ख़रीदने की इच्छा जगाई जाय। ये लोग बस अपना काम करते हैं और कुछ नहीं। क्या ख़रीदना है क्या नहीं इसकी ज़िम्मेदारी तो अंत मे उपभोक्ता की ही होती है।...

आर्थिक उन्नति के साथ बहुत से लोग काफ़ी धनी हो गये है, ये लोग अगर खुलकर ख़र्च करते हैं तो वो पैसा किसी न किसी रूप मे किसी के रोज़गार देन का माध्यम बनता है।बस इसका एक ही पक्ष गलत है कि देखा देखी करके वे लोग भी जिनकी क्षमता उतना ख़र्च करने की नहीं है इस प्रकार के सपने पाल लेते हैं। कभी कभी इन सपनों को पूरा करने के लिये अपराध की ओर मुड़ जाते हैं या हीन भावना से ग्रसित हो जाते हैं, जो कदापि सही नहीं है, परन्तु इसके लिये विज्ञापन जगत को दोष देना भी उचित नहीं है। उपभोक्ता को भी अपने लिये ख़ुद ही एक आचार संहिता बना कर उसका पालन करना चाहिये। सबसे पहले प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी करना ज़रूरी है, उसके बाद धीरे धीरे अन्य सुविधाये जुटानी चाहिये। उपभोक्ता को सजग रहना चाहिये ।... अपनी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के बाद कुछ धन सुरक्षित भविष्य के लिये निवेश करना भी ज़रूरी है, इन चीज़ो का एक मोटा सा प्रारूप दिमाग़ मे होना चाहिये। इसके बाद जो धन आपके पास अपल्ब्ध हो उसे अपने शौक पूरे करने के लिये प्रयोग किया जा सकता है।...

आजकल हर वस्तु मासिक किश्तों पर उपलब्ध होती है, कभी कोई एक चीज़ किश्तों पर ले ली जाय तो कोई बात नहीं पर कई चीज़े मासिक किश्तों मे लेने से हो सकता है प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी करने में या कोई आकस्मिक ज़रूरत आने पर कठिनाई का सामना करना पड़े।... अपनी चादर देखकर पाँव पसारने वाला मुहावरा हर स्थिति मे सही बैठता है।

आजकल तकनीकी और इलैक्ट्रौनिक्स के क्षेत्र मे रोज़ नये नये उत्पाद बहुत ज़ोर शोर के साथ बाज़ार मे उतारे जाते हैं। दिखावे के लिये ये सब इतनी जल्दी जल्दी बदलना भी ज़रूरी नहीं है, क्योंकि नये गैजेट के सारे फंक्शन शायद हरेक के लिये उपयोगी भी न हों।यदि आपका लैपटौप ठीक काम कर रहा है या मोबाइल भी ठीक ठाक है तो किसी नये मॉडल से आकर्षित होकर उसे बदलना भी ठीक नहीं होगा। माता पिता सोच समझ कर ख़रीददारी करते हैं तो संभावना यही है कि बच्चे भी फ़िज़ूल की ज़िद नहीं करेंगे। बच्चे कुछ माँग करें तो उन्हे सोच समझकर ही पूरा करना उचित है ।बच्चों को कुछ पौकेट मनी तो दी ही जाती है जब वे कुछ अच्छा काम करें तो उनको नक़द इनाम दे सकते हैं, जिससे वे समझदारी के साथ अपने शौक पूरा करना सीख जायेंगे। उन्हें दूसरों की चीज़ो से आकर्षित होकर ख़रीदने की आदत को बढ़ावा कभी नहीं देना चाहिये।

सबसे अहम बात यह है कि कोई चीज़ तब तक ही आपको आकर्षित करती है जब तक वह आपके पास नहीं होती, जब वह आपकी हो जाती है वह अपना आकर्षण खो देती है, किसी और चीज़ की तरफ़ आप आकर्षित हो जाते हैं। ज़रा सोच कर देखिये पिछली बार जब आपने कोई बहुत महँगी चीज़ खरीदी थी उसकी वजह से आप कितने दिन तक ख़ुश रहे थे ?

**Répondre aux questions suivantes**

**संतोष और असंतोष का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है ?** **इलैक्ट्रॉनिक उत्पाद बदलने की आवश्यकता कब होती है ?**
**उपभोक्ता की आचार संहिता क्या हो सकती है ?**

mardi 19 février 2013

# Vocabulaire et expressions

विज्ञापन (m) publicité
पसरना s'étendre
आकृष्ट attiré
सामान (m) affaires, bagages
ज़िद (f) obstination
आवश्यकता(f) nécessité
फ़ालतू inutile
वक्त (m) temps
मीडिया (m) média
पँहुच (f) portée
आम आदमी(m) l'homme de la rue
संतोष (m) satisfaction
निजी personnel
गुण (m) qualité
अकर्मण्य (m) incapable
हासिल करना (m) acquérir
बलवान, बलवती puissant/e
भ्रष्टाचार (m) corruption
अपराध (m) crime
आर्थिक économique
उन्नति (f) progrès
उत्पादन (m) production
निश्चय (m) décision, détermination
विकास (m) développement
संकेत (m) signe
रोज़गार (m) emploi
क्षमता (f) capacité
उत्पाद (m) produit
विकल्प (m) alternatif
माध्यम (m) moyen
जानकारी (f) information
उपभोक्ता (m) consommateur
व्यवसाय (m) business
जगत (m) monde
हिस्सा (m) partie
आचार संहिता (f) code de conduite
पालन करना suivre, observer
माल (m) effets personnels
तारीफ़ (f) l'éloge, appréciation
अतिशयोक्ति(f) excès

अश्लील pornographique
भावना (f) sentiment
ठेस (f) पहुँचाना heurter la sensibilité
इत्यादि etc.
ज़रिया (m) moyen
महत्व (m) importance
नकारना (m) contredire, nier
उद्देश्य (m) objectif
ज़िम्मेदारी (f) responsabilité
धनी (m) riche
खुलकर ख़र्च करना dépenser librement
सपने पालना rêvasser
हीन भावना (f) complexe d'infériorité
ग्रसित happé par
कदापि jamais
उचित approprié
आचार संहिता (f) code de conduite
प्राथमिक आवश्यकता (f) nécessité prioritaire
सुविधा(f) convenance, service
जुटाना engranger, recueillir
बुनियादी ज़रूरतों (f) nécessités de base
सुरक्षित sauvegardé, préservé
निवेश (m) investissement
प्रारूप (m) ébauche
शौक (m) dada, intérêt
प्रयोग करना(m) employer, expérimenter
मासिक किश्त (m) versement mensuel
आकस्मिक fortuit
कठिनाई (f) difficulté
चादर (f) drap, couverture
पसारना / फैलाना(m) répandre, allonger
मुहावरा (m) proverbe
दिखावा (m) apparence
उपयोगी utile
आकर्षित attiré
फ़िज़ूल inutile
नक़द argent comptant
वजह (f) raison